अध्यापक शिक्षा में जीवन कौशल शिक्षा

Anju soni
Research Scholar, Pacific University
Dr kaushik Pandya
Professor, Department of Education, Pacific University, Udaipur

1. प्रस्तावना :–

पुरातन काल से विश्व में शिक्षण एक पवित्र कार्य माना जाता रहा हैं। अध्यापक देश के भावी कर्णधारों अर्थात युग निर्माता की भूमिका अदा करता है।

विद्यार्थियों में ज्ञान के बीज का अंकुरण एक अध्यापक ही करता हैं चाहे वह माता की भूमिका में हो या शिक्षण संस्थाओं में अध्यापकों के रूप में हो। इसके सम्बन्ध में अरविन्द घोष ने कहा की '' शिक्षक राष्ट्र की संस्कृति के चतुर माली होते हैं वे संस्कारों की जड़ों में ज्ञान रूपी खाद देते हैं ओर श्रमनद से खींचकर उन्हें महाप्राण देते है।

इस महान उत्तरदायित्व का निर्वाह करने के लिए, अध्यापकों में उच्च शैक्षिण योग्यता, आधारभूत कौशलों एवं क्षमताओं को अर्जित करने की योग्यता होनी चाहिए।

शिक्षा के क्षेत्र में आज नवीन चुनौतियों उभरकर सामने आ रही हैं इन चुनौतियों का सामना करने की क्षमता विकसित करने के लिए अध्यापक शिक्षा में जीवन कौशलों के द्वारा बदलाव लाने की जरूरत है।

शिक्षा के बदलते स्वरूपों के सन्दर्भो में एक भावी अध्यापक में जीवन कौशलों की आवश्यकता होनी चाहिए, उन्ही की चर्चा इस लेख में की गई है।

2. अध्यापक शिक्षा का अर्थ, महत्व एवं आवश्यकता :–

अध्यापक शिक्षा से अभिप्राय उस शिक्षा से है जो भावी अध्यापकों को कुशल योग्य एवं सफल शिक्षक बनने के लिये प्रदान की जाती है। अध्यापक शिक्षा से सम्बन्ध सीधे तौर पर विद्यालयी शिक्षा से हैं क्योंकि अध्यापक शिक्षा व विद्यालयी शिक्षा एक दुसरे के पूरक हैं अध्यापक शिक्षा से ही विद्यालयी शिक्षा में सुधार लाया जा सकता है।

आधुनिक काल के प्रारम्भ में अध्यापक शिक्षा में शिक्षण–प्रशिक्षण के रूप में जाना जाता था, किन्तु शिक्षा शब्द के व्यापक एवं प्रशिक्षण के संकुचित अर्थ के कारण शिक्षाशास्त्रीयों ने शिक्षक–प्रशिक्षण को अध्यापक शिक्षा से स्थानान्तरित कर इस तथ्य की तरफ ध्यान आकर्षित किया कि अध्यापक शिक्षा का क्षेत्र शिक्षा के तीनों निर्धारित उद्देश्यों – ज्ञानात्मक, भावानात्मक एवं क्रियानात्मक से सम्बन्धित हैं।

भारत में अध्यापक शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में स्वामी विवेकानन्द ने कहा की हम ऐसी शिक्षा चाहते हैं जो चरित्र का निर्माण करें, मन शक्ति में वृद्धि करें, बुद्धि में विस्तार लाए एवं व्यक्ति को स्वावलम्बी बनाए।

अध्यापक शिक्षा के महत्व को ध्यान में रखते हुए शिक्षा आयोग (1986) में लिखा था कि ''शिक्षा में गुणात्मक सुधार के लिए यह अनिवार्य है कि अध्यापकों के वृत्तिक शिक्षक का एक समुचित कार्यक्रम हो। इस संदर्भ में राधाकृष्णन ने कहा उच्च शिक्षा स्तर पर जो अध्यापक अपने क्षेत्र का ज्ञाता न हो, अपने क्षेत्र के नवीनतम विकास से परिचित न हो, और अपने कर्तव्यों का निर्वहन स्वतन्त्र तथा रूचिपूर्ण ढ़ंग से नही कर पाता हो, वह शायद ही कभी युवा वर्ग को अच्छा करने के लिए प्रेरित कर पाता हैं जो कि उच्च शिक्षा का मुख्य उद्देश्य है। इस प्रकार स्पष्ट है कि प्रभावी अध्यापक बनने के लिये अध्यापक में उपर्युक्त विशेषताओं का होना आवश्यक हैं।

बदलते सामाजिक परिवेश के अनुरूप आज अध्यापकों का कार्यक्षेत्र और उनकी जवाबदेही चुनौतिपूर्ण बन चुकी हैं और शिक्षा के क्षेत्र में उभरते नए आयामों और जीवन कौशलों की महत्ता को दृष्टिगत रखते हुए आज अध्यापकों के प्रशिक्षण में गुणात्मक उन्नयन की आवश्यकता को महसूस किया जा रहा है।

अतः अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम आज एक राष्ट्रीय चिंतन का विषय बन चुका है जिसे राष्ट्रीय स्तर पर गंभीरता से विचार किया जाना भी आवश्यक हैं इसके साथ ही इस दिशा में व्यापक दृष्टि के साथ गहन शोध की भी आवश्यकता हैं ताकि शिक्षक–प्रशिक्षण संस्थाओं की यथार्थ स्थिति सुनिश्चित हो सके इस सम्बन्ध में कोठारी आयोग (1964–1986) में भी स्वीकार किया गया है कि अध्यापक शिक्षा के कार्यक्रमों का सार उसकी गुणवत्ता व उपयोगिता में हैं।

अतः जीवन की वास्तविकता यह है कि अध्यापक एक ऐसा संदेशवाहक है जो सभी प्रकार की भावनाओं को छात्रों में प्रतिस्थापित करना चाहें, वैसा कर सकता है। वैसा अन्य व्यक्ति के द्वारा संभव नहीं हैं, वह केवल शिक्षार्थी का मार्गदर्शक ही नही वरन् समाज का मार्गदर्शन भी करता है।

3. अध्यापक शिक्षा के उद्देश्य :–

अध्यापक शिक्षा की अवधारणा प्रशिक्षण से भी अधिक व्यापक हैं अध्यापक शिक्षा का सम्बन्ध सिर्फ शिक्षण कला में निपुणता से नही हैं बल्कि इसका उद्देश्य भावी अध्यापकों का व्यक्तिगत, सामाजिक, व्यावसायिक एवं नैतिक विकास कर उन्हें अध्यापक के विभिन्न उत्तरदायित्वों को सफलतापूर्वक एवं प्रभावशाली ढ़ंग से सम्पन्न करने योग्य बनाना है।

अध्यापक शिक्षा के महत्वपूर्ण उद्देश्य निम्नाकिंत है :–

(1) शिक्षक समाज और विद्यालय के बीच की कड़ी बने।

(2) शिक्षक न केवल बच्चों का मार्गदर्शक है बल्कि वह समाज का भी मार्गदर्शक बने।

(3) शिक्षक में ऐसा अवबोध, अभिवृत्तिया और कौशल विकसित करें, जो बालक के सर्वांगीण विकास में भूमिका निभा सके।

(4) कक्षा कक्ष के अन्दर व बाहर की शिक्षण अधिगम को प्रोत्साहित करने की दृष्टि से शिक्षक में अपेक्षित योग्यताओं का विकास करे।

4. अध्यापक शिक्षा मे जीवन कौशल शिक्षा की आवश्यकता एवं महत्व :–

भारतीय आधुनिक शिक्षा में, शिक्षा एक सतत् विकासशील प्रक्रिया हैं शिक्षा जब तक जीवन के मूल्यों, आदर्शो एवं मान्यताओं का परिचय नही देती तब तक वह शिक्षा नही कही जा सकती है।

आज की वर्तमान शिक्षा पद्धति सैद्धान्तिक पक्ष पर ही अधिक केन्द्रित हैं जिसने हमें उपयुक्त मानसिक मूल्यों एवं पृष्टभूमि से रहित कर दिया हैं तथा आत्म प्रकाशन की अधिकार पूर्ण शैली को खोजने में जो सच्ची लगन एवं मौलिकता की अपेक्षा हैं उससे भी वंचित कर दिया हैं जिसके कारण बालकों का सर्वांगीहण विकास नही हो पा रहा हैं।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में समाज की जो तस्वीर उभर कर सामने आयी हैं उसमें विरोधाभास, आक्रोश, तनाव, यौन उत्पीडन, असुरक्षा की भावना, चतुर्दिक हिंसा, भ्रष्टाचार एवं बेईमानी का तांडव नृत्य देखकर भयभीत होना स्वाभाविक हैं यह स्थिति समाज के समक्ष एक अभिश्राप के रूप में अवतरित हो रही हैं समाज को इस अभिश्राप से मुक्त कराने में जीवन कौशल शिक्षा मुख्य औजार के रूप में काम करती हैं। साथ ही विद्यार्थीयों और भावी अध्यापकों में जीवन कौशल शिक्षा सकारात्मक दृष्टिकोण का निर्माण करती हैं अतः इस व्यापक सन्दर्भ में यह कहा जा सकता है कि जीवन कौशल शिक्षा वह शैक्षिक आयोजन है जिसमें विद्यार्थीयों को इस तरह शिक्षित किया जा सकता हैं कि वह ज्ञान व मूल्यों के हस्तांतरण के साथ–साथ शैक्षिक व विकासात्मक दायित्वों को ग्रहण व वहन करने में सक्षम हो सके। इस प्रकार जीवन कौशल शिक्षा से विद्यार्थीयों को समाजोपयोगी, राष्ट्रोपयोगी व सम्पूर्ण मानवता के लिए उपयोगी बनाया

जाता हैं वर्तमान समय के संदर्भ में देखा जाए तो भावी अध्यापक ही एक सशक्त माध्यम दिखाई देता है जो विद्यार्थीयों के जीवन में ज्योति की अलख जगाता है साथ ही विद्यार्थी अध्यापक को अपना रोल मॉडल बना देते हैं। अध्यापक स्वयं क्या करता है? क्या सिखाता है? क्या व्यवहार करता है ? यह सब विद्यार्थीयों के निर्माण में अहम् भूमिका के रूप में होते हैं अतः एक भावी अध्यापक में नियमित दिनचर्या, सन्तुलित उत्तम चारित्रिक व्यवहार, स्वाध्याय, योग, ध्यान, प्राणायाम, मुधर वाचन अंहकार रहित जीवनयापन करते हुए जीवन कौशलों का विकास करने कर आवश्यकता हैं।

4.1 जीवन कौशल का अर्थ एवं महत्व :–

जीवन कौशल शिक्षा में से अभिप्राय उस ज्ञान से है, जिसकों प्राप्त कर विद्यार्थी दैनिक जीवन में हर काम या गतिविधियों को पूर्ण कुशलता एवं दक्षता के साथ कर सकता हैं।

विश्व स्वास्थ्य संगठन (W.H.O) ने 1993 में जीवन कौशल को परिभाषित करते हुए कहा है कि ''अनुकूल एवं सकारात्मक व्यवहार की वह क्षमताएँ जा किसी व्यक्ति को उसकी प्रतिदिन की आवश्यकताओं व चुनौतियों से प्रभावशाली ढ़ंग से सामना करने के योग्य बनाती हैं।

(UNISEF) युनिसेफ ने जीवन कौशल को व्यवहार परिवर्तन या व्यवहार विकास दृष्टिकोण के रूप में परिभाषित किया हैं। उन्होंने बताया कि ऐसे मूल कौशल दस हैं जिनकी पहचान की गई है।

UNICEF के द्वारा बताये गये मूल दस जीवन कौशल निम्न प्रकार हैं–

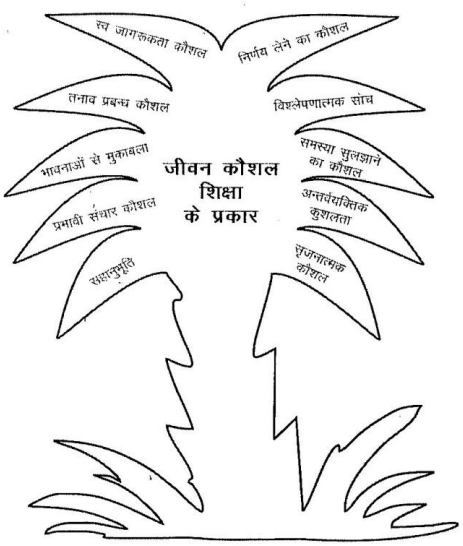

इसी प्रकार (W.H.O.) विश्व स्वास्थ्य संगठन ने उपरोक्त जीवन कौशल को तीन आयामों में वर्गीकृत किया है :–

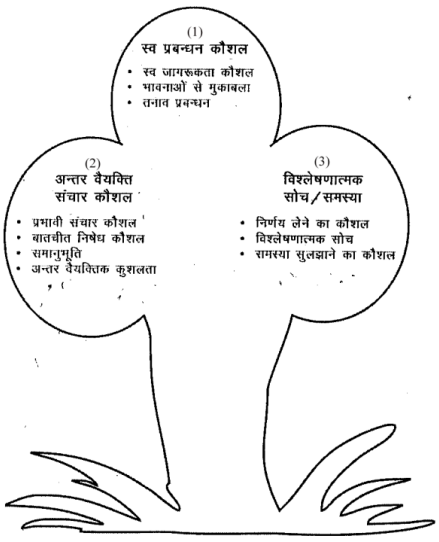

4.2 जीवन कौशल शिक्षा की आवश्यकता :–

जीवन कौशल शिक्षा सकारात्मक दृष्टिकोण का निर्माण करती हैं साथ ही इससे व्यक्ति के विचारों एवं भावों को ऊँचा उठाया जाता हैं, जिससे विद्यार्थीयों एवं शिक्षकों के जीवन में सकारात्मक सोच, लक्ष्य के प्रति दृढ़ता, निरंतर पुरूषार्थ, बड़ों के प्रति सम्मान एवं उद्देश्यों के प्रति पूर्ण सम्पर्ण की भावना उत्पन्न होती है अतः शिक्षा के क्षेत्र में उभरते नए आयामों और जीवन कौशलों की महत्ता को दृष्टिगत रखते हुए आज भावी अध्यापकों के प्रशिक्षण में गुणात्मकता पूर्ण सुधार की आवश्यकता हैं शिक्षा के बदलते स्वरूप के संदर्भ में एक भावी अध्यापक में मुख्य रूप से जो कौशल एवं योग्यताओं होनी चाहिए उसका प्रभाव आने वाली नयी पीढ़ी में हस्तांतरित होता हैं नयी पीढ़ी को संस्कारित करने में एवं सम्पूर्ण जीवन निर्माण प्रक्रिया में भावी अध्यापक मुख्य भूमिका अदा करता हैं अतः शिक्षार्थी के जीवन को गढ़ने में उत्प्रेरक व मार्गदर्शन की भूमिका निभाने वाले भावी अध्यापकों के स्वयं के प्रशिक्षण में जीवन कौशल शिक्षा के समावेश की महत्वपूर्ण आवश्यकता है।

4.3 भावी अध्यापकों में जीवन कौशल शिक्षा का औचित्य :–

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में कोई भी राष्ट्र उच्चकोटि के शिक्षित तथा कुशल शिक्षकों की आपूर्ति के प्रयत्नों के बिना सामाजिक या आर्थिक विकास के बारे में सोच ही नही सकता हैं।

हम देखते आ रहे है कि भारत में आदिकाल से ही शिक्षकों को बहुत मान सम्मान मिलता रहा है। परम्परागत भारतीय समाज में गुरू के स्थान को ईश्वर से उपर माना गया हैं। इसलिए माता–पिता के बाद बच्चों को सही दिशा देने का कार्य गुरू का ही होता हैं

सही मायने में देखा जाए तो शिक्षक का कार्य मात्र अनुदेशन देना ही नही हैं वरन् दावों के साथ एक उत्तम अन्तःक्रिया स्थापित करना भी हैं साथ ही उसे समाज के योग्य नागरिक के रूप में संवेदनशील बनाकर प्रतिष्ठा दिलाना भी है।

परन्तु आधुनिकरण के युग में शिक्षा ने हमें उपयुक्त मानसिक मूल्यों एवं पृष्ठभूमि से रहित कर दिया हैं आज का विद्यार्थीयों चकाचौंध में कहीं खो गया हैं वह अपने कर्तव्यों एवं दायित्वों से पीछे हट रहा हैं जिसके परिणाम स्वरूप जीवन कौशलों में बदलाव आ गया हैं विद्यालयों में पढ़ाये जाने वाले विषय विद्यार्थीयों का केवल बौद्धिक विकास करते हैं शिक्षा प्रणाली इतनी दुषित हो गई है कि इसमें जीवन कौशलों का स्थान नही रहा हैं जिसके कारण नयी पीढ़ी शारीरिक, मानसिक, भावानात्मक पक्षों के साथ–साथ नैतिकता व मूल्यहीनता की समस्याओं से अत्यधिक ग्रसित है इसलिए विद्यार्थीयों में जीवन कौशलों के निर्माण के लिए भावी शिक्षक ही एक मात्र सबल माध्यम हैं, जिसके जरिए समाज में परिवर्तन लाया जा सकता हैं अपने विद्यार्थीयों के लिए एक भावी शिक्षक आदर्शो के समान होता हैं, यदि भावी शिक्षक अपने जीवन में अनुशासन, ईमानदारी और जीवन कौशलों का निर्माण करता हैं तो विद्यार्थीयों भी उनके सद्गुणों को आत्मसात कर जीवन में वैसा ही आचरण करते हैं भावी शिक्षक का आचरण ही विद्यार्थीयों के लिए अनुकरणीय होता हैं इसलिए एक प्रभावशाली भावी शिक्षक में जीवन कौशलों का समावेश होना जरूरी हैं जिससे वह अपने एवं विद्यार्थीयों के घर, परिवार, समाज, राष्ट्र एवं विश्व में अपनत्व का अहसास करा सकें, जीवन के संघर्षो को समझने और उनसे जूझनें की क्षमता प्रदान कर सके, जीवन में आने वाली आपत्तियों से घबरा कर कायरों की तरह पलायन करने की अपेक्षा विवेक सम्मत सामना करने की क्षमता उत्पन्न कर सके।

5. अध्यापक शिक्षा में जीवन कौशल हेतु सुझाव :–

1. अध्यापकों को विद्यार्थीयों का सीधे चिन्तन एवं विश्लेषण करने हेतु उन्हें प्रेरित करके अथवा उन्हें प्रश्नों व प्रतिवादों से घेरते हुए ऐसी परिस्थितियों में डाल सकते हैं, जिससे वे खुद ब खुद सोचने और खोजने में विवश हो जाये।
2. अध्यापकों को विद्यार्थीयों के साथ लोकतांत्रिक माहोल में चर्चा परिचर्चा तथा उनके साथ अन्तःक्रिया करते हुए, उनके भीतर तर्क शक्ति और असहमति का विवेक एवं साहस जगाते हुए उन्हें स्वतंत्र रूप से चिन्तन करने को प्रोत्साहित करना चाहिए।
3. पाठ्य सामग्री क्रियाओं द्वारा अध्यापन कार्य करवाया जाना चाहिए जैसे नाटक, वाद–विवाद प्रतियोगिता, योग, ध्यान, प्राणायाम एवं कई संवेदनीय मुद्दों को बताया गया है जैसे एड्स सम्बन्धी जानकारी, समाज में फैली हुई कुप्रथाएं व असामाजिक परम्पराओं इसके माध्यम से पढ़ाया जा सकता है।
4. मस्तिष्क उहवेलन विधि के द्वारा ऐसे प्रकरणों को पढ़ाया जाये बालक स्वयं उसके बारे में सोचे, चर्चा करे, समझे व अन्तिम निर्णय पर पहुँचे।
5. भावी अध्यापकों की अपने शिक्षण में परम्परागत तकनीकी को छोड़कर शिक्षा में नवाचार को अपनाना चाहिए इस हेतु विद्यालय में दल शिक्षण, अभिक्रमित अनुदेशन, समस्या समाधान विधि तथा जीवन कौशलों का प्रयोग कर शिक्षण को और अपने जीवन के अस्तित्व को प्रभावशाली एवं गुणवत्तापूर्ण बनना चाहिए।

6. उपसंहार :–

आज शिक्षा में हमारे प्रयासों का केन्द्र बिन्दु भावी अध्यापक होना चाहिए क्योंकि अध्यापक को देश का भावी कर्णधार समाज का मार्गदर्शक माना गया है। आज उसमें ऐसे जीवन कौशल विकसित किये जाने चाहिए ताकि वह शिक्षा के अधिकार, माध्यमिक शिक्षा के सार्वजनिकरण आदि से पनपती नित नयी चुनौतियों बखुबी सामनाकर सके।

7. सन्दर्भ :–

1. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा, एन.सी.आर.टी., नई दिल्ली, 2005,
2. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा, एन.सी.आर.टी., नई दिल्ली, 2006
3. शिक्षक शिक्षा : नयी दृष्टि, भारतीय आधुनिक शिक्षा, एन.सी.आर.टी., नई दिल्ली,अंक जनवरी, 2010,
4. माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, 2012, जीवल कौशल शिक्षा राजस्थान, राज्य पाठ्य पुस्तक, मण्डल, जयपुर।